Original Research Paper Education

The Need of Value Based Education System: In Reference to JNU Issue

Dr. Shailendra Kumar Singh Assistant Professor, B.Ed. Department D.P.B.S. (PG) College, Anoopshahr, Bulandshahr (UP) PIN-203390

ABSTRACT

देश के प्रतिष्ठित जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय (जेएनयू) को सारा देश एक बेहद खास शिक्षा के मंदिर के रूप में देखता है, लेकिन वर्तमान समय में जिस तरह से जेएनयू परिसर में देश–विरोधी गतिविधियों की खबरें आने लगी हैं, वह चिंता पैदा करती हैं। इन प्रतिष्ठित संस्थानों में पढ़ने वाले कुछ छात्र अपने राष्ट्र के साथ साथ दूसरों के धर्म, संस्कृति, और परम्पराओं का मजाक बनाने लगते हैं। अभिव्यक्ति की ये कैसी आजादी है, जो देश की आजादी के लिए खतरा है? निश्चित रूप से भारत जैसे देश में प्रत्येक नागरिक के मानवाधिकारों की रक्षा करना सरकार का दायित्व है, व्यक्ति चाहे अपराधी ही क्यों न हो, जीवित रहने का अधिकार उसे भी है, यही मानवाधिकारों का मूल सिद्धांत है। जो अधिकार अपराधियों के प्रति भी संवेदना दिखाने के हिमायती हों, वह आम नागरिकों के सम्मान और जीवन के तो रक्षक होंगे ही, पर जेएनयू जैसी घटनाओं को देखकर यही लगता है कि इस देश के पेशेवर मानवाधिकारों के रक्षक, सिर्फ अपराधियों के प्रति ही संवेदनशील हैं, आम नागरिकों के प्रति नहीं। जेएनयू ने देश को बड़े–बड़े बुद्धिजीवी दिए हैं, दक्षिणपंथी और वामपंथी विचारधारा के बीच यहां हमेशा से बौद्धिक टकराव होते रहे हैं लेकिन अब जिस तरह से देश विरोधी गतिविधियां यहां पनप रही हैं उससे जेएनयू की छवि खराब हुई है, सभी को याद रखना चाहिए कि देश का संविधान अभिव्यक्ति की आजादी देश विरोधी गतिविधियों के लिए नहीं देता है, उसकी अपनी हदें होती हैं, उसका उल्लंघन करना किसी भी परिस्थिति में जायज नहीं माना जा सकता। किसी भी शैक्षणिक संस्थान में राष्ट्र को कमजोर करने वाली गतिविधियों का कोई भी स्थान नहीं होना चाहिए। शिक्षा के प्राथमिक स्तर से उच्च स्तर तक छात्रों के लिए मूल्य परक नैतिक शिक्षा, संस्कृति ज्ञान आदि को अनिवार्य रूप से पाठ्यक्रम में समावेशित किया जाये, ताकि छात्रों में मानवीय, सामाजिक, सांस्कृतिक, लोकतान्त्रिक मूल्यों का विकास हो सके।

KEYWORDS :

प्रस्तावना:

"विश्वविद्यालय का उद्देश्य मानवता, सहनशीलता, तर्कशीलता, चिन्तन प्रक्रिया और सत्य की खोज की भावना को स्थापित करना होता है। इसका उद्देश्य मानव जाति को निरन्तर महत्तर लक्ष्य की ओर प्रेरित करना होता है। अगर विश्वविद्यालय अपना कर्तव्य ठीक से निभाएं तो यह देश और जनता के लिए अच्छा होगा।"

- पं० जवाहरलाल नेहरू, 13 दिसम्बर 1947 इलाहाबाद विश्वविद्यालय

देश की राजधानी स्थित जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय की स्थापना जेएनयू अधिनियम 1966 के अन्तर्गत भारतीय संसद् द्वारा 22 दिसंबर 1966 में की गई थी। विश्वविद्यालय का औपचारिक उद्घाटन भारत के तत्कालीन राष्ट्रपति स्व. श्री वी.वी. गिरी द्वारा जवाहरलाल नेहरू के जन्म दिवस के अवसर पर 14 नवम्बर 1969 को किया गया था। विश्वविद्यालय स्थापना के मुख्य उद्देश्य अध्ययन, अनुसंधान और अपने संगठित जीवन के उदाहरण और प्रभाव द्वारा ज्ञान का प्रसार तथा अभिवृद्धि करना। उन सिद्धान्तों के विकास के लिए प्रयास करना, जिनके लिए जवाहरलाल नेहरू ने जीवन–पर्यंत काम किया। जैसे – राष्ट्रीय एकता, सामाजिक न्याय, धर्म निरपेक्षता, जीवन की लोकतांत्रिक पद्धति, अन्तरराष्ट्रीय समझ और सामाजिक समस्याओं के प्रति वैज्ञानिक दृष्टिकोण, आदि रखे गये। लेकिन वर्तमान समय में जिस तरह से जेएनयू परिसर में देश–विरोधी गतिविधियों की खबरें आने लगी हैं, वह चिंता पैदा करती हैं। देश के इस प्रतिष्ठित विश्वविद्यालय में कुछ वर्षों से राष्ट्र विरोधी मानसिकता पल्लवित हो रही है, जिसका पोषण वहाँ के कुछ छात्रों एवं शिक्षकों द्वारा भी किया जा रहा है। एक लोकतान्त्रिक राष्ट्र की अस्मिता पर कुठाराघात किया जा रहा है, यहाँ पर होने वाली गतिविधियाँ का इतिहास पुराना है, आइये इनमें से कुछ गतिविधियों पर एक नजर डालते है...

1. वर्ष 2000 में वामपंथी छात्र संगठनों द्वारा भारत–पाक मुशायरे का आयोजन किया गया, जिसमें पाकिस्तान के शायरों ने भारत और भारतीय सेना को निशाने पर रखा।
2. वर्ष 2010 में छतीसगढ़ में सी.आर.पी.एफ. के 76 जवानों की नक्सलियों द्वारा निर्मम हत्या किये जाने पर, जेएनयू में जीत–ए–जश्न का आयोजन किया गया। इसी वर्ष 22 अक्टूबर को "Aazadi:The Only Way" विषय पर एक संगोष्ठी का आयोजन किया गया, जिसमें कई अलगाववादी नेता शामिल हुये और इस संगोष्ठी में कश्मीर की आजादी की मांग भी की गयी।
3. वर्ष 2013 में जब नवरात्रि के दौरान पूरा देश देवी दुर्गा की आराधना कर रहा था, उसी वक्त जेएनयू में दुर्गा का अपमान करने वाले पर्चे, पोस्टर जारी करके न सिर्फ अशांति फैलाई गई, बल्कि महिषासुर को महिमामंडित कर महिषासुर शहादत दिवस का आयोजन किया गया।
4. 26 जनवरी, 2015 को 'इंटरनेशनल फूड फेस्टिवल' के बहाने कश्मीर को अलग देश दिखाकर उसका स्टाल लगाया गया।
5. 9 फरवरी 2016 को जेएनयू परिसर में संसद पर हमले के गुनहगार अफजल गुरु की बरसी मनाई गयी और इसके लिए कैंपस में एक सांस्कृतिक संध्या का आयोजन किया गया, इस दौरान कैंपस में देश विरोधी नारे भी लगाए गए।

अभिवक्ति की ये कैसी आजादी है, जो देश की आजादी के लिए खतरा है? क्या इन छात्रों ने कभी उस हमले में शहीद हुए लोगों को भी याद किया? जेएनयू में ऐसी राष्ट्र विरोधी हरकतें होती रही हैं, जेएनयू कैंपस में हिंदू देवी देवताओं की आपत्तिजनक तस्वीरें लगाकर नफरत पैदा करने की कोशिश की थी। आतंकी अफजल गुरु की फांसी पर भी जेएनयू कैंपस में मातम मनाया गया था। अगर इसी प्रकार सभी अभिव्यक्ति की आजादी के आधार पर लोग मनमानी करते रहेंगे, राष्ट्र विरोधी, लोकतंत्र विरोधी राग अलापते रहे तो निश्चित ही हम शीत युद्ध या गृह युद्ध की ओर अग्रसर होंगे और आतंरिक रूप से राष्ट्र कमजोर हो जायेगा, ऐसी स्थिति में आमजन के मूलभूत अधिकारों अर्थात मानवाधिकारों का हनन होगा और बाहरी शक्तियां भी आसानी से हमें पराजित कर सकती है। जब सरकार दोषी छात्र छात्राओं को चिन्हित कर कारवाही कर रही है तब इन छात्र छात्राओं के समर्थन में कई राजनीतिक दलों के नेता अभिव्यक्ति की आजादी और मानवाधिकार की बात कर, दोषी छात्र छात्राओं की वकालत कर रहे हैं, शायद उन्हें देश से अधिक अपने वोटों की चिंता है, शायद उन्हें शीघ्र सत्ता पाने की लालसा भी है।

कारण:

इन प्रतिष्ठित संस्थानों में पढ़ने वाले कुछ छात्र शायद अपने आप को अतियोग्य, सर्वज्ञानी, व सर्वश्रेष्ठ समझने लगते है। इसी कारण वो सदैव दूसरों को अपने से निम्न मानते है, और दूसरों के धर्म, संस्कृति, और परम्पराओं का मजाक बनाने लगते हैं। इन गतिविधियों के आयोजन के मुख्य कारण निम्नवत है-

1. सरकार एवं सरकारी नीतियों के कारण छात्र असन्तोष।
2. छात्रों में मानवीय, सामाजिक एवं लोकतान्त्रिक मूल्यों का ह्रास होना।
3. आराजक एवं अलगाववादी तत्वों द्वारा कुछ छात्रों को गुमराह किया जाना।
4. कुछ छात्रों में प्रतिष्ठित विश्वविद्यालय से पढाई करने के कारण श्रेष्ठता का गुमान।

5. कुछ छात्रों में अति शीघ्र प्रसिद्धि पाने की लालसा में लीक से हटकर कार्य करने की प्रवृति।

सुझाव:

जेएनयू में वर्षों पूर्व जब राष्ट्र विरोधी गतिविधियों का आयोजन किया जाना प्रारंभ किया गया था, तभी विश्वविद्यालय प्रशासन को आयोजकों पर सख्त कार्यवाही करनी चाहिए थी, और भविष्य में इस प्रकार के आयोजनों की अनुमति भी नहीं दी जानी चाहिए थी। अगर ऐसा होता तो आज ऐसे हालत उत्पन्न नहीं होते। किसी भी शैक्षणिक संस्थान में राष्ट्र को कमजोर करने वाली गतिविधियों का कोई भी स्थान नहीं होना चाहिए। इस प्रकार की गतिविधियों में सम्मलित छात्रों की मूल समस्याओं को जानने का प्रयास करना चाहिए, और उसी के अनुरूप छात्रों के लिए परामर्श एवं निर्देशन की व्यवस्था की जानी चाहिए थी। इसके बाद भी ना समझने वाले छात्रों को शैक्षणिक संस्था से निलंबित या निष्काशित कर देना चाहिए। दोषी छात्रों को समर्थन देने वाले व्यक्तियों पर भी अपराधी को संरक्षण देने के आरोप में विधिक कार्यवाही की जानी चाहिए। शिक्षा के प्राथमिक स्तर से उच्च स्तर तक छात्रों के लिए मूल्य परक नैतिक शिक्षा, संस्कृति ज्ञान आदि को अनिवार्य रूप से पाठ्यक्रम में समावेशित किया जाये, ताकि छात्रों में मानवीय, सामाजिक, सांस्कृतिक, लोकतान्त्रिक मूल्यों का विकास हो सके।

निष्कर्ष:

निश्चित रूप से भारत जैसे देश में प्रत्येक नागरिक के मानवाधिकारों की रक्षा करना सरकार का दायित्व है, व्यक्ति चाहे अपराधी ही क्यों न हो, जीवित रहने का अधिकार उसे भी है, यही मानवाधिकारों का मूल सिद्धांत है। जो अधिकार अपराधियों के प्रति भी संवेदना दिखाने के हिमायती हों, वह आम नागरिकों के सम्मान और जीवन के तो रक्षक होंगे ही, पर जेएनयू जैसी घटनाओं को देखकर यही लगता है कि इस देश के पेशेवर मानवाधिकारों के रक्षक, सिर्फ अपराधियों के प्रति ही संवेदनशील हैं, आम नागरिकों के प्रति नहीं। जेएनयू ने देश को बड़े–बड़े बुद्धिजीवी दिए हैं, दक्षिणपंथी और वामपंथी विचारधारा के बीच यहां हमेशा से बौद्धिक टकराव होते रहे हैं लेकिन अब जिस तरह से देश विरोधी गतिविधियां यहां पनप रही हैं उससे जेएनयू की छवि खराब हुई है, सभी को याद रखना चाहिए कि देश का संविधान अभिव्यक्ति की आजादी देश विरोधी गतिविधियों के लिए नहीं देता है, उसकी अपनी हदें होती हैं, उसका उल्लंघन करना किसी भी परिस्थिति में जायज नहीं माना जा सकता। किसी भी शैक्षणिक संस्थान में राष्ट्र को कमजोर करने वाली गतिविधियों का कोई भी स्थान नहीं होना चाहिए। इस प्रकार की गतिविधियों में सम्मलित छात्रों को शैक्षणिक संस्था से निलंबित या निष्काषित कर देना चाहिए। दोषी छात्रों को समर्थन देने वाले व्यक्तियों पर भी अपराधी को संरक्षण देने के आरोप में विधिक कार्यवाही की जानी चाहिए। शिक्षा के प्राथमिक स्तर से उच्च स्तर तक छात्रों के लिए मूल्य परक नैतिक शिक्षा, संस्कृति ज्ञान आदि को अनिवार्य रूप से पाठ्यक्रम में समावेशित किया जाये, ताकि छात्रों में मानवीय, सामाजिक, सांस्कृतिक, लोकतान्त्रिक मूल्यों का विकास हो सके। शिक्षा के माध्यम से ही हम छात्रों को मुख्य धारा में शामिल कर सकते है, उन्हें राह पर ला सकते हैं।

सन्दर्भ:

1. शर्मा रामनाथ, शर्मा राजेंद्र कुमार (2004) मानवशास्त्र, अटलांटिक पब्लिशर्स एण्ड डिस्ट्रीब्यूटर्स, नयी दिल्ली
2. शर्मा रामनाथ, शर्मा राजेंद्र कुमार (2007) भारत में सामाजिक परिवर्तन एवं सामाजिक समस्याएं, अटलांटिक पब्लिशर्स एण्ड डिस्ट्रीब्यूटर्स, नयी दिल्ली
3. Srivastava, Smriti (2012) Human Values and Professional Ethics, S.K. Katariya & Sons, New Delhi.
4. http://www.jnu.ac.in
5. http://www.scoopwhoop.com/The-Entire-JNU-Issue-Summarised/
6. http://thelogicalindian.com/stor y-feed/opinion/all-you-need-to -know-about-the-jnu-controversy -and- the-logical- indians-opinion-on-the-issue/
7. http://indiatoday.intoday.in/story/no-action-against-afzal- guru-commemoration-in-jnu-issue-rocked-social-media/1/593006.html
8. http://khabar.ndtv.com/topic/jnu-issue
9. http://zeenews.india.com/hindi/india/why-slogans-pakistan-zindabad-in-jnu/283148